

मायूसी

मायूसी की छटा इतनी निराली है जहाँ चले जाओ आपको यह देखने को मिल जायेगी अपने भारत में क्यों है इसका इतना बोल-बाला ?

पहला कारण मेरी समझ में धर्म को डर कर मानना है उसे सही रूप में समझना नहीं है। डर सम्मान या आदर का पर्याय बन चुका है। नतीजा यह है कि बच्चा अभिभवक से, अध्यापक से, पुलिस से, धर्म गुरु से डरे। समाज कीयही आपेक्षा अनजाने में संस्कारों के नाम पर, अपनी अगली पीढ़ी को सौंप दी जाती है।

इसके परिणाम स्वरूप दूसरा मायूसी का कारण बन जाता है नियमों से डरना है, उन्हें न समझना है, न उन्हें मानने का मन करता है। यदि कोई अकुंश नहीं है तो खुले रूप से उनकी अवहेलना करो। सही तो यही होगा कि जो नियम अनावश्यक है व समाज के हित में नहीं है उनको हटाने की या बदलने की कोशिश लोकतंत्रिक तरीकों से की जाये लेकिन हर समय उससे डरकर बैठे रहने की मानसिकता के हम आदी हो चुके हैं जैसे सरकार कही बाहर की आई हुई है उनको क्यों सलुझाओ, हमारे पास सिर्फ दो ही तरीके हैं या तो सिर झुकाकर मान लो या विद्रोह और तोड़ फोड़ करा करदेश को पीछे की तरफ ढकेल दो। प्रजातंत्र या लोकतंत्र के हम आदी ही नहीं तो नेताओं को क्या समझायेगे। चुपचाप घर पर बैठे रहो। मुझे क्या करना है? ज्यादा से ज्यादा सरिता में एक स्तम्भ आता तो है उसमें छपा तो है, कोई हिम्मत वाला व्यक्ति होगा तो आगे ले जायेगा, हमपर तो आचं नहीं आयेगी, हम तो बाल बच्चेदार आदमी हैं हम क्या कर सकते हैं ?

अपने देश में इतने अधिक नियम हैं कि संसार में कही नहीं होंगे। ऐसा लगता है जैसे जानवरों को नियंत्रण में रखना है तो उतने नियम तो होने ही चाहिये। बस फर्क इतना है कि जानवर न पढ़ सकते हैं पर हमसे बहुत पढ़ भी सकते हैं तो क्या ? नेता, अभिनेता, अमरि व्यक्तिजैसा करेंगे हम भी कर लेंगे। हमें अपना अच्छा बुरा समझने की छूट कहीं है। एक नियम है कि सरकारी कर्मचारी (दर असल इनका नाम जन सेवक होना चाहिये) मैं आफिसर नहीं कह रहा हूँ उसमें ब्रिटिश राज की बू आती है, राज नीति में भाग नहीं ले सकते हैं। आज जब सरकार हमारी है जनतंत्र हमारा है, सोचे कि कितने होशियार व्यक्ति प्रजातंत्र की प्रक्रिया से बाहर हैं। जब कि सत्य यह कि यह सारे कर्मचारी दिन भर आफिस में सिर्फ राजनीति की ही बातें करते रहते हैं। समय की मांग यह होनी चाहिये कि आफिस के समय इन बातों को करने की मनाही ही नहीं अखबार पढ़ने की भी मनाही होनी चाहिये। इसलिये इस नियम को हटाना ही अच्छा रहेगा।

मायूसी का एक और तीसरा कारण है कि हम हमेशा अपने से ऊपर बालों को ही देखते हैं और हम समझते हैं कि हमारी तरक्की जभी मानी जायेगी जब हम उनके बराबर कमायेगे। यह एक मृग तृष्णा है जो आज तक किसी की भी नहीं बुझी है। इस मायूसी को दूर करने का सबसे अच्छा उपाय है कि हम अपने से नीचे बालों के ऊत्थान के लिये, बिना किसी फल की इच्छा के इनकी मदद करें, समाज सेवा करें। दिन में चाहे पांच मिनट का हीसमय दे। इससे आपको व्यक्तिगत फायदा होगा यह सोचे बगैर इस भावना से काम करें कि मेरे चारों ओर खुशहाल व्यक्ति होंगे तभी असली उन्नति होगी तो मैं आपको एक राज की बात बता दूँ कि फायदा आपको ही ज्यादा होगा क्योंकि आपको उतनी ज्यादा खुशी और सन्तोष मिलेगा जो आज तक आपने किसी और काम से नहीं हुआ था न होगा। और यह मायूसी आपके पास भी नहीं फटकेगी।

हम बहुत सी बातों को समझते व जानते हैं पर जब तक हम अच्छी बातों को अपने जीवन का एक अंग नहीं बनायेगे उनका कोई भी लाभ हमें नहीं मिलेगा। हाँ नुकसान भी नहीं होगा। मायूसी इस कदर हमारे जीवन में घुस चुकी है कि हर समय आपको यही सुनने को मिलेगा कि हमारे करने से क्या होने वाला है ? कहाँ से शुरू करें। भय्या आप सारी समस्याये तो हल करने से रहे पर एक को ही ले लें। उसके बारे में गहराई तक सोचें और उसको दूर करने में प्रयत्न करेंगे तो यह मायूसी आपके पास भी नहीं फटकेगी क्योंकि आप एक समस्या को सुलझाने में लगे होंगे और आप विश्वास किजिये तो सफलता आपके कदम चूमेगी, वरना यह मायूसी आपको कही का भी नहीं रहने देगी, जैसा आप हर तरफ देख ही रहे हैं।

दिनांक : 14 जनवरी 2003

रश्मि उमेश रोहतगी

24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA phone : (248) 471-5786

webpage : www.ruohatgi.com Email : ruohatgi@yahoo.com